everythingexperiential.com /article/women-empowerment-at-forefront-of-4th-bharat-soka-gakkai-symposium-524526

Women Empowerment At Forefront Of 4th Bharat Soka Gakkai Symposium

EE Online Bureau ⁝ 4-6 minutes

The symposium titled, “Breaking Barriers: Women Shaping a New Society for the Dignity of Life” held at the BSG headquarters on 26 June, threw light on how women are contributing towards changing the narratives in society

With the aim of breaking gender barriers and moving towards a more peaceful society, Bharat Soka Gakkai, an organisation promoting peace, culture, education and sustainability, organised a women’s symposium on 26 June.

The symposium titled, “Breaking Barriers: Women Shaping a New Society for the Dignity of Life” held at the BSG headquarters, threw light on how women are contributing towards changing the narratives in society, thereby creating and influencing a new, and progressive society. It also explored how women with resilience, courage and conviction are breaking down barriers and shaping a more just and equitable world.

The speakers included Prof. Bijayalaxmi Nanda, Principal – Miranda House College, University of Delhi; Rita Jairath, Director – Ritambe Nutrition (Proksham), Chief Safeguarding & Child Safety Officer, AIFF IFBB PRO Athlete & International Judge; Archana Dutta, Social Entrepreneur, Co-Founder & CEO, Pedal On and

Founder CEO, Second Act; and Namrta Bangia, Senior Director, Global Mass Transit, AV America and Southeast Asia Infrastructure.

Rashi Ahuja, Director, BSG welcomed the speakers and attendees at the symposium. She said, “Our gathering today celebrates the profound impact of women in transforming societal norms and structures to uphold human dignity. We, as women, have shattered countless glass ceilings, defied limitations, and carved our own paths. The esteemed guests and speakers today are a testament of this ongoing journey.”

In her keynote address, Prof. Nanda shared that “Breaking barriers and supporting women to develop to their fullest potential requires us to focus on creating an enabling community network dedicated to the values of equity, empowerment and empathy.”

Jairath said, “Each life lived with conscious awareness to bring about a paradigm shift in areas such humanity may evolve and that the quality of life for the more vulnerable people can be enhanced, adds to the collective consciousness of the universe. What we do to achieve that vision is secondary and just an instrument.”.

Dutta spoke about the need for women to lead and inspire others. She said, “I am proud to be a woman breaking barriers and shaping a society built on dignity and respect. I encourage all women to embrace their strength and courage, to rise and lead, and to inspire others. Together, we can create a future where every woman thrives.”

Bangia said “What's in the psyche of successful women that allows them to break through their self-doubt? I believe it is their focus on building courage. High-achieving women take firm steps to move forward, even while struggling with fears, self-esteem and self-confidence.”

Vishesh Gupta, Chairperson, Bharat Soka Gakkai delivered the closing remarks. He spoke about the need to continue incorporating the unique voices of women to build more resilient societies. He said “Crucial to tackling complex global issues lies in incorporating the unique voices and diverse perspectives of women. By doing so, we can build societies with resilience, strength and flexibility to overcome any challenge.”

Pedal On also presented a display showcasing the work of empowered women.

HINDUSTAN TIMES LUCKNOW

Women's symposium held

LUCKNOW: Bharat Soka Gakkai, an organisation promoting peace, culture, education, and sustainability, organised a women's symposium on June 26 with the theme, "Breaking Barriers: Women Shaping a New Society for the Dignity of Life." Held at the BSG headquarters, the symposium highlighted women's roles in transforming societal norms and fostering a more just and equitable world.

शिवालिक टाइम्स

जनता की आवाज

SHIMLA हिमाचल

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए भारत सोका गाक्काई की चौथी संगोष्ठी: " सीमाओं को तोड़कर – जीवन की गरिमा के लिए एक नये समाज की रचना करती महिलाएं"

By admin

JUN 26, 2024

Spread the love

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए भारत सोका गाक्काई की चौथी संगोष्ठी: " सीमाओं को तोड़कर – जीवन की गरिमा के लिए एक नये समाज की रचना करती महिलाएं"

नई दिल्ली, भारत; 26 जून 2024: लैंगिक बाधाओं को तोड़ने और एक शांतिपूर्ण समाज की स्थापना करने के उद्देश्य से, शांति, संस्कृति, शिक्षा और स्थिरता को बढ़ावा देने वाली संस्था, भारत सोका गाक्काई ने 26 जून को एक महिला संगोष्ठी का आयोजन किया।

बी एस जी मुख्यालय में आयोजित इस संगोष्ठी का शीर्षक था " सीमाओं को तोड़कर – जीवन की गरिमा के लिए एक नये समाज की रचना करती महिलाएं" इस संगोष्ठी में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि कैसे महिलाएं सामाजिक धारणाओं को बदलने में योगदान दे रही हैं, अपने इस योगदान द्वारा वे एक नये और प्रगतिशील समाज की रचना कर रही हैं तथा उसे प्रभावित कर रही हैं। चर्चा में यह खोजने मालूम करने की कोशिश की गई, कि कैसे लचीलापन, साहस और दृढ़ विश्वास रखने वाली महिलाएं बाधाओं को तोड़कर एक और अधिक न्यायपूर्ण और न्याय संगत दुनिया की रचना कर रही हैं।

बी एस जी की निदेशक सुश्री राशि आहूजा ने संगोष्ठी में साम्मीलित सभी वक्ताओं और श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि आज हम मानवीय गरिमा को बनाए रखने के लिए सामाजिक मानदंडों और संरचनाओं को बदलने में महिलाओं के गहरे प्रभाव की प्रशंसा करने के लिए एकत्रित हुए हैं।

अपने बीज भाषण में प्रो बिजयलक्ष्मी नंदा ने कहा किया कि "बाधाओं को तोड़ने और महिलाओं को उनकी पूरी क्षमता से विकसित करने में सहायता करने के लिए हमें समानता, सशक्तिकरण और सहानुभूति के मूल्यों के लिए समर्पित एक सक्षम सामुदायिक नेटवर्क बनाने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।"

डॉ. रीता जैरथ ने कहा, "प्रत्येक जीवन एक आदर्श बदलाव लाने के लिए सचेत जागरूकता के साथ जीया जाना चाहिए ताकि ऐसी मानवता विकसित हो सके जिसमे कमजोर वर्ग के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सके। यह ब्रह्मांड की सामूहिक चेतना में वृद्धि करता है । ऐसे दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए हम जो करते हैं वह गौण है और केवल एक साधन है।"

सुश्री अर्चना दत्ता ने महिलाओं को नेतृत्व करने और दूसरों को प्रेरित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, "मुझे एक महिला होने और बाधाओं को तोड़कर गरिमा और सम्मान पर आधारित समाज की रचना करने पर गर्व है। मैं सभी महिलाओं को अपनी ताकत और हिम्मत को समझने, आगे बढ़ने और नेतृत्व करने और दूसरों को प्रेरित करने के लिए प्रोत्साहित करती हूं। साथ मिलकर, हम एक ऐसा भविष्य बना सकते हैं जहां हर महिला उन्नति कर सकेगी।"

सुश्री नम्रता बांगिया ने कहा, "सफल महिलाओं के मानस में ऐसा क्या है जो उन्हें खुद पर संदेह नहीं करने देता है? मेरा मानना है कि उनका ध्यान हमेशा अपने इरादे को मजबूत करने पर रहता है। उच्च उपलब्धि हासिल करने वाली महिलाएं भय, आत्म सम्मान और आत्म विश्वास से संघर्ष करते हुए भी आगे बढ़ने के लिए दृढ़ कदम उठाती हैं।

वक्ताओं में प्रो. बिजयलक्ष्मी नंदा (प्रिंसिपल – मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय); डॉ. रीता जैरथ (निदेशक – रिताम्बे न्यूट्रिशन प्राइवेट लिमिटेड (प्रोक्षम), मुख्य सुरक्षा एवं बाल सुरक्षा अधिकारी, एआईएफएफ आईएफबीबी प्रो एथलीट और अंतर्राष्ट्रीय जज); सुश्री अर्चना दत्ता (सामाजिक उद्यमी, सह-संस्थापक और सीईओ – पेडल ऑन, संस्थापक; सीईओ – सेकण्ड एक्ट); और सुश्री नम्रता बांगिया (वरिष्ठ निदेशक, ग्लोबल मास ट्रांजिट, एवी अमेरिका और दक्षिण पूर्व एशिया इन्फ्रास्ट्रक्चर)।

भारत सोका गाक्काई के अध्यक्ष श्री विशेष गुप्ता ने समापन भाषण अधिक लचीले समाज के निर्माण के लिए महिलाओं की अनूठी आवाज़ों को शामिल करने को जारी रखने की आवश्यकता पर बल दिया । उन्होंने कहा, "जटिल वैश्विक मुद्दों से निपटने के लिए महिलाओं की अनूठी आवाज़ों और विविध दृष्टिकोणों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। ऐसा कर के, हम एक मजबूत लचीले समाज का निर्माण कर सकते हैं जो किसी प्रकार की चुनौती से निपटने में सक्षम होगा ।"

संगोष्ठी के प्रांगण में पेडल-ऑन द्वारा एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। इसमें उसके कार्यों को प्रदर्शित किया गया।

भारत सोका गाक्काई के बारे में:
भारत सोका गाक्काई (बीएसजी) सभी के लिए खुशी और शांति को बढ़ावा देने वाली एक संस्था है। बीएसजी शांति ,संस्कृति,शिक्षा और सतत एवं स्थायी विकास से सम्बंधित विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करती है। इन गतिविधियों का उद्देश्य है, भारत में एक 'नये युग का निर्माण करना ,जहाँ सभी प्रकार के जीवन को सम्मान मिले। बीएसजी में सभी आयु वर्ग के 2,75,000 से अधिक स्वैच्छिक सदस्य हैं, जो भारत के 600 कस्बों और शहरों में रहते हैं। 2030 तक एक टिकाऊ युग का निर्माण करने के लिए बीएसजी ने 2021 में 'बी एस जी फॉर एस डी जी' नामक पहल की शुरुआत की। इस पहल का आदर्श वाक्य था : '2030 की ओर : सतत मानव व्यवहार के माध्यम से एस डी जी को हासिल करना' इस पहल के तहत बीएसजी कई गतिविधियां चला रही है। ताकि स्थिरता की संस्कृति के निर्माण में आम आदमी की भूमिका के प्रति जागरुकता फैलायी जा सके तथा एक ऐसी दुनिया का निर्माण किया जा सके जहाँ कोई भी पीछे न रह जाये।

« 75 प्रतिशत पूर्ण हो चुकी परियोजनाओं को प्राथमिकता के आधार पर किया जाएगा पूराः विक्रमादित्य सिंह

राज्यपाल ने सम्पूर्ण क्रान्ति आंदोलन महोत्सव का शुभारम्भ किया »

By admin

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए भारत सोका गाक्काई की चौथी संगोष्ठी: "सीमाओं को तोड़कर - जीवन की गरिमा के लिए एक नये समाज की रचना करती महिलाएं"

नई दिल्ली, भारत; २६ जून २०२४

लैंगिक बाधाओं को तोड़ने और एक शांतिपूर्ण समाज की स्थापना करने के उद्देश्य से, शांति, संस्कृति, शिक्षा और स्थिरता को बढ़ावा देने वाली संस्था, भारत सोका गाक्काई ने २६ जून को एक महिला संगोष्ठी का आयोजन किया।

बी एस जी मुख्यालय में आयोजित इस संगोष्ठी का शीर्षक था "सीमाओं को तोड़कर जीवन की गरिमा के लिए एक नये समाज की रचना करती महिलाएं" इस संगोष्ठी में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि कैसे महिलाएं सामाजिक धारणाओं को बदलने में योगदान दे रही हैं, अपने इस योगदान द्वारा वे एक नये और प्रगतिशील समाज की रचना कर रही हैं तथा उसे प्रभावित कर रही हैं। चर्चा में यह खोजने की कोशिश की गई, कि कैसे लचीलापन, साहस और दृढ़ विश्वास रखने वाली महिलाएं बाधाओं को तोड़कर एक और अधिक न्यायपूर्ण और न्याय संगत दुनिया की रचना कर रही हैं।

वक्ताओं में प्रो. विजयलक्ष्मी नंदा (प्रिंसिपल मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय); डॉ. रीता जैरथ (निदेशक - रिताम्बे न्यूट्रिशन प्राइवेट लिमिटेड (प्रोक्षम), मुख्य सुरक्षा एवं बाल सुरक्षा अधिकारी, एआईएफएफ आईएफबीबी प्रो एथलीट और अंतर्राष्ट्रीय जज); सुश्री अर्चना दत्ता (सामाजिक उद्यमी, सह-संस्थापक और सीईओ पेडल ऑन, संस्थापक, सीईओ सेकण्ड - - एक्ट); और सुश्री नम्रता बांगिया (वरिष्ठ निदेशक, ग्लोबल मास ट्रांजिट, एवी अमेरिका और दक्षिण पूर्व एशिया इन्फ्रास्ट्रक्चर)।

बी एस जी की निदेशिका सुश्री राशि आहूजा ने संगोष्ठी में सम्मिलित सभी वक्ताओं और श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि आज हम मानवीय गरिमा को बनाए रखने के लिए सामाजिक मानदंडों और संरचनाओं को बदलने में महिलाओं के गहरे प्रभाव की प्रशंसा करने के लिए एकत्रित हुए हैं।

ભારત સોકા ગકાઈ નેરા વોમેન્સ સિંપોઝિયમ પર નારીઓને શક્તિશાલી બનાવે છે: બ્રેકિંગ બેરિયર્સ: નારીઓ જીવનની ગૌરવતા માટે નવી સમાજ રચાવી રહ્યા છે

નવી દિલ્હી, ભારત; ૨૯ જૂન ૨૦૨૪: સિભારીઓને તોડવાનો લક્ષ્ય અને એક શાંતિપૂર્ણ સમાજની દિશામાં અગ્રસર થવાના ધ્યેયથી, ભારત સોકા ગકાઈ, એક શાંતિ, સંસ્કૃતિ, શિક્ષણ અને સામર્થ્યવર્ધન પ્રચાર કરતી સંસ્થા, ૨૯ જૂન નાં નારીઓના સિંપોઝિયમ આયોજિત કર્યું હતું.

બીએસજી મુખ્યાલયમાં આયોજિત ×બ્રેકિંગ બેરિયર્સ: નારીઓ જીવનની ગૌરવતા માટે નવી સમાજ રચાવી રહ્યા છે× શીર્ષકના સિંપોઝિયમમાં સ્ત્રીઓ કેવી રીતે સમાજમાં નવાં દૃષ્ટિકોનો રચનાત્મક રૂપ આપી રહી છે તે પર જોર આપ્યા સ્પષ્ટ કરવામાં આવ્યું. તેમની માધ્યમથી માહિતી મળે છે કે સંગઠિત તરીકે કેવી રીતે બ્રાંડ કરેલા સ્ત્રીઓ વિકસાવે છે, તેવા સામાજિક વિચારોને બદલવામાં મદદ કરે છે, અને એક નવું અને પ્રગતિશીલ સમાજ રચવામાં જોડવામાં આવે છે.

સ્પીકર્સ માંમલતદારો છે: પ્રો. બિજયલક્ષ્મી નંદા (પ્રિન્સિપલ - મિરાંડા હાઉસ કોલેજ, દિલ્હી યુનિવર્સિટી); ડૉ. રીતા જાઇરાથ (ડિરેક્ટર - રિતાંબે ન્યુટ્રિશન પ્રાઇવેટ લિમિટેડ (પ્રોક્ષમ), ચીફ સેફગાર્ડિંગ અને બાળક સુરક્ષા અધિકારી, એઆઈએફએફ આઈએફબીબી પ્રો એથ્લીટ અને આંતરરાષ્ટ્રીય ન્યાયક); મિસ્સ અર્ચના દત્ત (સામાજિક ઉદ્યમક, સહ-સ્થાપક અને સિઇઓ - પેડલ ઓન, સ્થાપક; સિઇઓ - સેકન્ડ એક્ટ); અને મિસ્સ નમૃતા બાંગીયા (સીનિયર ડિરેક્ટર, ગ્લોબલ માસ ટ્રાન્ઝિટ, એવી અમેરિકા અને દક્ષિણ પૂર્વ એશિયા ઇન્ફ્રાસ્ટ્રક્ચર).

શ્રીમતી રાશિ આહુજા, બીએસજીના ડાયરેક્ટર, સિંપોઝિયમ પર આવેલા સ્પીકર્સ અને હજારીદારોને આભાર આપ્યા અને કહ્યું, ×આજે અમારું સભ્યતા અને સંરચનાઓમાં સ્ત્રીઓની અસર વિશે મુજબનું ઉત્સવ છે. અમે સ્ત્રીઓ તરફથી અનેક વિચારકૃષ્ટ સ્થાપિત કરેલા ચાંદીની છત્તીઓ તોડી દીધી છે, મર્યાદાઓ પાર કરી છે અને આપણી વાચા જીવરી છીએ. આજના માન્ય મહેમાનો અને સ્પીકર્સ આ ચાલુ યાત્રાની પ્રતિસ્થાપના છે.×

તેમણે આપી કે છે: બર્યાંચ નીયતિ માટે અનુમોદન અને સહાનુભૂતિના મુલ્યોના અર્પણ માટે એક બેરિયરનું તોડવું અને સ્ત્રીઓને તેમના પૂરે ભાવિષ્યતને વિકસવા માટે સમર્પિત સમુદાય નેટવર્ક સૃષ્ટિ કરવી જોઈએ.

ડૉક્ટર રીતા જાઇરાથે આપ્યું કે: ×દરેક જીવન, ચેતનાયુક્ત જીવનશૈલી સાથે જીવનના પરિવર્તન લાવવાનું જેવી શોગે માનવતા વિકસવી શકે અને તેમ કરતાં વધુ સસ્થાપિત લોકોના જીવનની ગુણવત્તા માટે યોગ્ય બનાવવામાં મદદ કરે છે, તે વિશ્વના સંગ્રહણ ચેતનામાં ઉમેરવી છે. આ લક્ષ્ય પ્રાપ્ત કરવા માટે આપે શું કરીએ છે તે દ્વારા જ મહત્વપૂર્ણ છે અને ફક્ત એક સાધન છે.×

SHIMLA TODAY

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए भारत सोका गाक्काई की चौथी संगोष्ठीः " सीमाओं को तोड़कर – जीवन की गरिमा के लिए एक नये समाज की रचना करती महिलाएं"

By Shimla Today

JUN 26, 2024

Spread the love

नई दिल्ली, भारत; 26 जून 2024: लैंगिक बाधाओं को तोड़नेऔर एक शांतिपूर्ण समाज की स्थापना करने के उद्देश्य से, शांति, संस्कृति, शिक्षा और स्थिरता को बढ़ावा देने वालीसंस्था, भारत सोका गाक्काई ने 26 जून को एक महिलासंगोष्ठी का आयोजन किया।

बी एस जी मुख्यालय में आयोजित इस संगोष्ठी का शीर्षक था" सीमाओं को तोड़कर – जीवन की गरिमा के लिए एक नयेसमाज की रचना करती महिलाएं" इस संगोष्ठी में इस बात परप्रकाश डाला गया कि कैसे महिलाएं सामाजिक धारणाओं कोबदलने में योगदान दे रही हैं, अपने इस योगदान द्वारा वे एक नयेऔर प्रगतिशील समाज की रचना कर रही हैं तथा उसे प्रभावितकर रही हैं। चर्चा में यह खोजने मालूम करने की कोशिश कीगई, कि कैसे लचीलापन, साहस और दृढ़ विश्वास रखने वालीमहिलाएं बाधाओं को तोड़कर एक और अधिक न्यायपूर्ण औरन्याय संगत दुनिया की रचना कर रही हैं।

बी एस जी की निदेशक सुश्री राशि आहूजा ने संगोष्ठी मेंसाम्मीलित सभी वक्ताओं और श्रोताओं का स्वागत करते हुएकहा कि आज हम मानवीय गरिमा को बनाए रखने के लिएसामाजिक मानदंडों और संरचनाओं को बदलने में महिलाओं केगहरे प्रभाव की प्रशंसा करने के लिए एकत्रित हुए हैं।

अपने बीज भाषण में प्रो बिजयलक्ष्मी नंदा ने कहा किया कि"बाधाओं को तोड़ने और महिलाओं को उनकी पूरी क्षमता सेविकसित करने में सहायता करने के लिए हमें समानता, सशक्तिकरण और सहानुभूति के मूल्यों के लिए समर्पित एकसक्षम सामुदायिक नेटवर्क बनाने पर ध्यान केंद्रित करने कीआवश्यकता है।"

डॉ. रीता जैरथ ने कहा, "प्रत्येक जीवन एक आदर्श बदलावलाने के लिए सचेत जागरूकता के साथ जीया जाना चाहिएताकि ऐसी मानवता विकसित हो सके जिसमे कमजोर वर्ग केजीवन की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सके। यह ब्रह्मांड कीसामूहिक चेतना में वृद्धि करता है । ऐसे दृष्टिकोण को प्राप्तकरने के लिए हम जो करते हैं वह गौण है और केवल एकसाधन है।"

सुश्री अर्चना दत्ता ने महिलाओं को नेतृत्व करने और दूसरों कोप्रेरित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, "मुझेएक महिला होने और बाधाओं को तोड़कर गरिमा और सम्मानपर आधारित समाज की रचना करने पर गर्व है। मैं सभीमहिलाओं को अपनी ताकत और हिम्मत को समझने, आगेबढ़ने और नेतृत्व करने और दूसरों को प्रेरित करने के लिएप्रोत्साहित करती हूं। साथ मिलकर, हम एक ऐसा भविष्य बनासकते हैं जहां हर महिला उन्नति कर सकेगी।"

सुश्री नम्रता बांगिया ने कहा, "सफल महिलाओं के मानस मेंऐसा क्या है जो उन्हें खुद पर संदेह नहीं करने देता है? मेरामानना है कि उनका ध्यान हमेशा अपने इरादे को मजबूत करनेपर रहता है। उच्च उपलब्धि हासिल करने वाली महिलाएं भय, आत्म सम्मान और आत्म विश्वास से संघर्ष करते हुए भी आगेबढ़ने के लिए दृढ़ कदम उठाती हैं।

वक्ताओं में प्रो. बिजयलक्ष्मी नंदा (प्रिंसिपल – मिरांडा हाउसकॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय); डॉ. रीता जैरथ (निदेशक – रिताम्बे न्यूट्रिशन प्राइवेट लिमिटेड (प्रोक्षम), मुख्य सुरक्षा एवंबाल सुरक्षा अधिकारी, एआईएफएफ आईएफबीबी प्रोएथलीट और अंतर्राष्ट्रीय जज); सुश्री अर्चना दत्ता (सामाजिकउद्यमी, सह-संस्थापक और सीईओ – पेडल ऑन, संस्थापक; सीईओ – सेकण्ड एक्ट); और सुश्री नम्रता बांगिया (वरिष्ठनिदेशक, ग्लोबल मास ट्रांजिट, एवी अमेरिका और दक्षिण पूर्वएशिया इन्फ्रास्ट्रक्चर)।

भारत सोका गाक्काई के अध्यक्ष श्री विशेष गुप्ता ने समापनभाषण अधिक लचीले समाज के निर्माण के लिए महिलाओं कीअनूठी आवाज़ों को शामिल करने को जारी रखने कीआवश्यकता पर बल दिया । उन्होंने कहा, "जटिल वैश्विक मुद्दोंसे निपटने के लिए महिलाओं की अनूठी आवाज़ों और विविधदृष्टिकोणों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। ऐसा कर के, हमएक मजबूत लचीले समाज का निर्माण कर सकते हैं जो किसीप्रकार की चुनौती से निपटने में सक्षम होगा ।"

संगोष्ठी के प्रांगण में पेडल-ऑन द्वारा एक प्रदर्शनी काआयोजन भी किया गया। इसमें उसके कार्यों को प्रदर्शित कियागया।

भारत सोका गाक्काई के बारे में:

भारत सोका गाक्काई (बीएसजी) सभी के लिए खुशी और शांति कोबढ़ावा देने वाली एक संस्था है। बीएसजी शांति ,संस्कृति,शिक्षा औरसतत एवं स्थायी विकास से सम्बंधित विभिन्न गतिविधियों का आयोजनकरती है। इन गतिविधियों का उद्देश्य है, भारत में एक 'नये युग का निर्माणकरना ,जहाँ सभी प्रकार के जीवन को सम्मान मिले। बीएसजी में सभीआयु वर्ग के 2,75,000 से अधिक स्वैच्छिक सदस्य हैं, जो भारत के 600 कस्बों और शहरों में रहते हैं। 2030 तक एक टिकाऊ युग का निर्माण करनेके लिए बीएसजी ने 2021 में 'बी एस जी फॉर एस डी जी' नामक पहलकी शुरुआत की। इस पहल का आदर्श वाक्य था : '2030 की ओर : सततमानव व्यवहार के माध्यम से एस डी जी को हासिल करना' इस पहल केतहत बीएसजी कई गतिविधियां चला रही है। ताकि स्थिरता की संस्कृतिके निर्माण में आम आदमी की भूमिका के प्रति जागरुकता फैलायी जासके तथा एक ऐसी दुनिया का निर्माण किया जा सके जहाँ कोई भी पीछेन रह जाये।

शिमला में नए आपराधिक कानूनों पर वार्तालाप आयोजित की गई »

By Shimla Today

THE NEWS EXPRESS

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए भारत सोका गाक्काई की चौथी संगोष्ठी: "सीमाओं को तोड़कर – जीवन की गरिमा के लिए एक नये समाज की रचना करती महिलाएं"

By The News Express
JUN 26, 2024 #Bharat Soka Gakkai, #india, #Women empowerment, #Women entrepreneurs

नई दिल्ली, भारत; 26 जून 2024: लैंगिक बाधाओं को तोड़ने और एक शांतिपूर्ण समाज की स्थापना करने के उद्देश्य से, शांति, संस्कृति, शिक्षा और स्थिरता को बढ़ावा देने वाली संस्था, भारत सोका गाक्काई ने 26 जून को एक महिला संगोष्ठी का आयोजन किया।

बी एस जी मुख्यालय में आयोजित इस संगोष्ठी का शीर्षक था "सीमाओं को तोड़कर – जीवन की गरिमा के लिए एक नये समाज की रचना करती महिलाएं" इस संगोष्ठी में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि कैसे महिलाएं सामाजिक धारणाओं को बदलने में योगदान दे रही हैं, अपने इस योगदान द्वारा वे एक नये और प्रगतिशील समाज की रचना कर रही हैं तथा उसे प्रभावित कर रही हैं। चर्चा में यह खोजने की कोशिश की गई, कि कैसे लचीलापन, साहस और दृढ़ विश्वास रखने वाली महिलाएं बाधाओं को तोड़कर एक और अधिक न्यायपूर्ण और न्याय संगत दुनिया की रचना कर रही हैं।

वक्ताओं में प्रो. विजयलक्ष्मी नंदा (प्रिंसिपल – मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय); डॉ. रीता जैरथ (निदेशक – रिताम्बे न्यूट्रिशन प्राइवेट लिमिटेड (प्रोक्षम), मुख्य सुरक्षा एवं बाल सुरक्षा अधिकारी, एआईएफएफ आईएफबीबी प्रो एथलीट और अंतर्राष्ट्रीय जज); सुश्री अर्चना दत्ता (सामाजिक उद्यमी, सह-संस्थापक और सीईओ – पेडल ऑन, संस्थापक; सीईओ – सेकण्ड एक्ट); और सुश्री नम्रता बांगिया (वरिष्ठ निदेशक, ग्लोबल मास ट्रांजिट, एवी अमेरिका और दक्षिण पूर्व एशिया इन्फ्रास्ट्रक्चर)।

बी एस जी की निदेशिका सुश्री राशि आहूजा ने संगोष्ठी में सम्मिलित सभी वक्ताओं और श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि आज हम मानवीय गरिमा को बनाए रखने के लिए सामाजिक मानदंडों और संरचनाओं को बदलने में महिलाओं के गहरे प्रभाव की प्रशंसा करने के लिए एकत्रित हुए हैं।

अपने बीज भाषण में प्रो विजयलक्ष्मी नंदा ने कहा किया कि "बाधाओं को तोड़ने और महिलाओं को उनकी पूरी क्षमता से विकसित करने में सहायता करने के लिए हमें समानता, सशक्तिकरण और सहानुभूति के मूल्यों के लिए समर्पित एक सक्षम सामुदायिक नेटवर्क बनाने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।"

डॉ. रीता जैरथ ने कहा, "प्रत्येक जीवन एक आदर्श बदलाव लाने के लिए सचेत जागरूकता के साथ जिया जाना चाहिए ताकि ऐसी मानवता विकसित हो सके जो कमजोर वर्ग के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ा सके। यह ब्रह्मांड की सामूहिक चेतना में वृद्धि करता है । ऐसे दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए हम जो करते हैं वह गौण है और केवल एक साधन है।"

सुश्री अर्चना दत्ता ने महिलाओं को नेतृत्व करने और दूसरों को प्रेरित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, "मुझे एक महिला होने और बाधाओं को तोड़कर गरिमा और सम्मान पर आधारित समाज की रचना करने पर गर्व है। मैं सभी महिलाओं को अपनी ताकत और हिम्मत को समझने, आगे बढ़ने और नेतृत्व करने तथा दूसरों को प्रेरित करने के लिए प्रोत्साहित करती हूं। साथ मिलकर, हम एक ऐसा भविष्य बना सकते हैं जहां हर महिला उन्नति कर सकेगी।"

सुश्री नम्रता बांगिया ने कहा, "सफल महिलाओं के मानस में ऐसा क्या है जो उन्हें खुद पर संदेह नहीं करने देता? मेरा मानना है कि उनका ध्यान हमेशा अपने इरादे को मजबूत करने पर रहता है। उच्च उपलब्धि हासिल करने वाली महिलाएं भय, आत्म सम्मान और आत्म विश्वास से संघर्ष करते हुए भी आगे बढ़ने के लिए दृढ़ कदम उठाती हैं।"

भारत सोका गाक्काई के अध्यक्ष श्री विशेष गुप्ता ने अपने समापन भाषण में अधिक लचीले समाज के निर्माण के लिए महिलाओं की अनूठी आवाज़ों को शामिल करने तथा उन्हें जारी रखने की आवश्यकता पर बल दिया । उन्होंने कहा, "जटिल वैश्विक मुद्दों से निपटने के लिए महिलाओं की अनूठी आवाज़ों और विविध दृष्टिकोणों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। ऐसा कर के, हम एक मजबूत तथा लचीले समाज का निर्माण कर सकते हैं जो किसी भी प्रकार की चुनौती से निपटने में सक्षम होगा ।"

संगोष्ठी के प्रांगण में पेडल-ऑन द्वारा एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। जिसमें उसके कार्यों को प्रदर्शित किया गया।

[ગિફ્ટ સિટીમાં "દારૂનો નશો" ન ચડ્યો નિયમો વધુ હળવા થશે »]

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए भारत सोका गाक्काई की चौथी संगोष्ठी का आयोजन

By shrikhand times ⁝ 5-6 minutes ⁝ 6/26/2024

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए भारत सोका गाक्काई की चौथी संगोष्ठी: " सीमाओं को तोड़कर – जीवन की गरिमा के लिए एक नये समाज की रचना करती महिलाएं"

नई दिल्ली, भारत; 26 जून 2024: लैंगिक बाधाओं को तोड़ने और एक शांतिपूर्ण समाज की स्थापना करने के उद्देश्य से, शांति, संस्कृति, शिक्षा और स्थिरता को बढ़ावा देने वाली संस्था, भारत सोका गाक्काई ने 26 जून को एक महिला संगोष्ठी का आयोजन किया।

बी एस जी मुख्यालय में आयोजित इस संगोष्ठी का शीर्षक था " सीमाओं को तोड़कर – जीवन की गरिमा के लिए एक नये समाज की रचना करती महिलाएं" इस संगोष्ठी में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि कैसे महिलाएं सामाजिक धारणाओं को बदलने में योगदान दे रही हैं, अपने इस योगदान द्वारा वे एक नये और प्रगतिशील समाज की रचना कर रही हैं तथा उसे प्रभावित कर रही हैं। चर्चा में यह खोजने मालूम करने की कोशिश की गई, कि कैसे लचीलापन, साहस और दृढ़ विश्वास रखने वाली महिलाएं बाधाओं को तोड़कर एक और अधिक न्यायपूर्ण और न्याय संगत दुनिया की रचना कर रही हैं।

बी एस जी की निदेशक सुश्री राशि आहूजा ने संगोष्ठी में सम्मिलित सभी वक्ताओं और श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि आज हम मानवीय गरिमा को बनाए रखने के लिए सामाजिक मानदंडों और संरचनाओं को बदलने में महिलाओं के गहरे प्रभाव की प्रशंसा करने के लिए एकत्रित हुए हैं।

अपने बीज भाषण में प्रो बिजयलक्ष्मी नंदा ने कहा किया कि "बाधाओं को तोड़ने और महिलाओं को उनकी पूरी क्षमता से विकसित करने में सहायता करने के लिए हमें समानता, सशक्तिकरण और सहानुभूति के मूल्यों के लिए समर्पित एक सक्षम सामुदायिक नेटवर्क बनाने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।"

डॉ. रीता जैरथ ने कहा, "प्रत्येक जीवन एक आदर्श बदलाव लाने के लिए सचेत जागरूकता के साथ जीया जाना चाहिए ताकि ऐसी मानवता विकसित हो सके जिसमे कमजोर वर्ग के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सके। यह ब्रह्मांड की सामूहिक चेतना में वृद्धि करता है । ऐसे दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए हम जो करते हैं वह गौण है और केवल एक साधन है।"

सुश्री अर्चना दत्ता ने महिलाओं को नेतृत्व करने और दूसरों को प्रेरित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, "मुझे एक महिला होने और बाधाओं को तोड़कर गरिमा और सम्मान पर आधारित समाज की रचना करने पर गर्व है। मैं सभी महिलाओं को अपनी ताकत और हिम्मत को समझने, आगे बढ़ने और नेतृत्व करने और दूसरों को प्रेरित करने के लिए प्रोत्साहित करती हूं। साथ मिलकर, हम एक ऐसा भविष्य बना सकते हैं जहां हर महिला उन्नति कर सकेगी।"

सुश्री नम्रता बांगिया ने कहा, "सफल महिलाओं के मानस में ऐसा क्या है जो उन्हें खुद पर संदेह नहीं करने देता है? मेरा मानना है कि उनका ध्यान हमेशा अपने इरादे को मजबूत करने पर रहता है। उच्च उपलब्धि हासिल करने वाली महिलाएं भय, आत्म सम्मान और आत्म विश्वास से संघर्ष करते हुए भी आगे बढ़ने के लिए दृढ़ कदम उठाती हैं।

वक्ताओं में प्रो. बिजयलक्ष्मी नंदा (प्रिंसिपल – मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय); डॉ. रीता जैरथ (निदेशक – रिताम्बे न्यूट्रिशन प्राइवेट लिमिटेड (प्रोक्षम), मुख्य सुरक्षा एवं बाल सुरक्षा अधिकारी, एआईएफएफ आईएफबीबी प्रो एथलीट और अंतर्राष्ट्रीय जज); सुश्री अर्चना दत्ता (सामाजिक उद्यमी, सह-संस्थापक और सीईओ – पेडल ऑन, संस्थापक; सीईओ – सेकण्ड एक्ट); और सुश्री नम्रता बांगिया (वरिष्ठ निदेशक, ग्लोबल मास ट्रांजिट, एवी अमेरिका और दक्षिण पूर्व एशिया इन्फ्रास्ट्रक्चर)।

भारत सोका गाक्काई के अध्यक्ष श्री विशेष गुप्ता ने समापन भाषण अधिक लचीले समाज के निर्माण के लिए महिलाओं की अनूठी आवाज़ों को शामिल करने को जारी रखने की आवश्यकता पर बल दिया । उन्होंने कहा, "जटिल वैश्विक मुद्दों से निपटने के लिए महिलाओं की अनूठी आवाज़ों और विविध दृष्टिकोणों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। ऐसा कर के, हम एक मजबूत लचीले समाज का निर्माण कर सकते हैं जो किसी प्रकार की चुनौती से निपटने में सक्षम होगा ।"

संगोष्ठी के प्रांगण में पेडल-ऑन द्वारा एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। इसमें उसके कार्यों को प्रदर्शित किया गया।

भारत सोका गाक्काई के बारे में:
भारत सोका गाक्काई (बीएसजी) सभी के लिए खुशी और शांति को बढ़ावा देने वाली एक संस्था है। बीएसजी शांति ,संस्कृति,शिक्षा और सतत एवं स्थायी विकास से सम्बंधित विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करती है। इन गतिविधियों का उद्देश्य है, भारत में एक 'नये युग का निर्माण करना ,जहाँ सभी प्रकार के जीवन को सम्मान मिले। बीएसजी में सभी आयु वर्ग के 2,75,000 से अधिक स्वैच्छिक सदस्य हैं, जो भारत के 600 कस्बों और शहरों में रहते हैं। 2030 तक एक टिकाऊ युग का निर्माण करने के लिए बीएसजी ने 2021 में 'बी एस जी फॉर एस डी जी' नामक पहल की शुरुआत की।इस पहल का आदर्श वाक्य था : '2030 की ओर : सतत मानव व्यवहार के माध्यम से एस डी जी को हासिल करना' इस पहल के तहत बीएसजी कई गतिविधियां चला रही है। ताकि स्थिरता की संस्कृति के निर्माण में आम आदमी की भूमिका के प्रति जागरुकता फैलायी जा सके तथा एक ऐसी दुनिया का निर्माण किया जा सके जहाँ कोई भी पीछे न रह जाये।

Post navigation

Previous Chapter   Next Chapter

सोका गाक्काई की चौथी संगोष्ठी: " सीमाओं को तोड़कर – जीवन की गरिमा के लिए एक नये समाज की रचना करती महिलाएं"

मीना कौंडल : 4-6 minutes

सोका गाक्काई की चौथी संगोष्ठी: " सीमाओं को तोड़कर – जीवन की गरिमा के लिए एक नये समाज की रचना करती महिलाएं"

नई दिल्ली: लैंगिक बाधाओं को तोड़ने और एक शांतिपूर्ण समाज की स्थापना करने के उद्देश्य से, शांति, संस्कृति, शिक्षा और स्थिरता को बढ़ावा देने वाली संस्था, भारत सोका गाक्काई ने 26 जून को एक महिला संगोष्ठी का आयोजन किया।

बी एस जी मुख्यालय में आयोजित इस संगोष्ठी का शीर्षक था " सीमाओं को तोड़कर – जीवन की गरिमा के लिए एक नये समाज की रचना करती महिलाएं" इस संगोष्ठी में इस बात पर प्रकाश डाला गया कि कैसे महिलाएं सामाजिक धारणाओं को बदलने में योगदान दे रही हैं, अपने इस योगदान द्वारा वे एक नये और प्रगतिशील समाज की रचना कर रही हैं तथा उसे प्रभावित कर रही हैं। चर्चा में यह खोजने मालूम करने की कोशिश की गई, कि कैसे लचीलापन, साहस और दृढ़ विश्वास रखने वाली महिलाएं बाधाओं को तोड़कर एक और अधिक न्यायपूर्ण और न्याय संगत दुनिया की रचना कर रही हैं।

बी एस जी की निदेशक सुश्री राशि आहूजा ने संगोष्ठी में साम्मीलित सभी वक्ताओं और श्रोताओं का स्वागत करते हुए कहा कि आज हम मानवीय गरिमा को बनाए रखने के लिए सामाजिक मानदंडों और संरचनाओं को बदलने में महिलाओं के गहरे प्रभाव की प्रशंसा करने के लिए एकत्रित हुए हैं।

अपने बीज भाषण में प्रो बिजयलक्ष्मी नंदा ने कहा किया कि "बाधाओं को तोड़ने और महिलाओं को उनकी पूरी क्षमता से विकसित करने में सहायता करने के लिए हमें समानता, सशक्तिकरण और सहानुभूति के मूल्यों के लिए समर्पित एक सक्षम सामुदायिक नेटवर्क बनाने पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है।"

डॉ. रीता जैरथ ने कहा, "प्रत्येक जीवन एक आदर्श बदलाव लाने के लिए सचेत जागरूकता के साथ जीया जाना चाहिए ताकि ऐसी मानवता विकसित हो सके जिसमे कमजोर वर्ग के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाया जा सके। यह ब्रह्मांड की सामूहिक चेतना में वृद्धि करता है । ऐसे दृष्टिकोण को प्राप्त करने के लिए हम जो करते हैं वह गौण है और केवल एक साधन है।"

अर्चना दत्ता ने महिलाओं को नेतृत्व करने और दूसरों को प्रेरित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने कहा, "मुझे एक महिला होने और बाधाओं को तोड़कर गरिमा और सम्मान पर आधारित समाज की रचना करने पर गर्व है। मैं सभी महिलाओं को अपनी ताकत और हिम्मत को समझने, आगे बढ़ने और नेतृत्व करने और दूसरों को प्रेरित करने के लिए प्रोत्साहित करती हूं। साथ मिलकर, हम एक ऐसा भविष्य बना सकते हैं जहां हर महिला उन्नति कर सकेगी।"

नम्रता बांगिया ने कहा, "सफल महिलाओं के मानस में ऐसा क्या है जो उन्हें खुद पर संदेह नहीं करने देता है? मेरा मानना है कि उनका ध्यान हमेशा अपने इरादे को मजबूत करने पर रहता है। उच्च उपलब्धि हासिल करने वाली महिलाएं भय, आत्म सम्मान और आत्म विश्वास से संघर्ष करते हुए भी आगे बढ़ने के लिए दृढ़ कदम उठाती हैं।

वक्ताओं में प्रो. बिजयलक्ष्मी नंदा (प्रिंसिपल – मिरांडा हाउस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय); डॉ. रीता जैरथ (निदेशक – रिताम्बे न्यूट्रिशन प्राइवेट लिमिटेड (प्रोक्षम), मुख्य सुरक्षा एवं बाल सुरक्षा अधिकारी, एआईएफएफ आईएफबीबी प्रो एथलीट और अंतर्राष्ट्रीय जज); सुश्री अर्चना दत्ता (सामाजिक उद्यमी, सह-संस्थापक और सीईओ – पेडल ऑन, संस्थापक; सीईओ – सेकण्ड एक्ट); और सुश्री नम्रता बांगिया (वरिष्ठ निदेशक, ग्लोबल मास ट्रांजिट, एवी अमेरिका और दक्षिण पूर्व एशिया इन्फ्रास्ट्रक्चर)।

भारत सोका गाक्काई के अध्यक्ष श्री विशेष गुप्ता ने समापन भाषण अधिक लचीले समाज के निर्माण के लिए महिलाओं की अनूठी आवाज़ों को शामिल करने को जारी रखने की आवश्यकता पर बल दिया । उन्होंने कहा, "जटिल वैश्विक मुद्दों से निपटने के लिए महिलाओं की अनूठी आवाज़ों और विविध दृष्टिकोणों को शामिल करना महत्वपूर्ण है। ऐसा कर के, हम एक मजबूत लचीले समाज का निर्माण कर सकते हैं जो किसी प्रकार की चुनौती से निपटने में सक्षम होगा ।"

संगोष्ठी के प्रांगण में पेडल-ऑन द्वारा एक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया। इसमें उसके कार्यों को प्रदर्शित किया गया।

भारत सोका गाक्काई के बारे में:
भारत सोका गाक्काई (बीएसजी) सभी के लिए खुशी और शांति को बढ़ावा देने वाली एक संस्था है। बीएसजी शांति ,संस्कृति,शिक्षा और सतत एवं स्थायी विकास से सम्बंधित विभिन्न गतिविधियों का आयोजन करती है। इन गतिविधियों का उद्देश्य है, भारत में एक 'नये युग का निर्माण करना ,जहाँ सभी प्रकार के

जीवन को सम्मान मिले। बीएसजी में सभी आयु वर्ग के 2,75,000 से अधिक स्वैच्छिक सदस्य हैं, जो भारत के 600 कस्बों और शहरों में रहते हैं। 2030 तक एक टिकाऊ युग का निर्माण करने के लिए बीएसजी ने 2021 में 'बी एस जी फॉर एस डी जी' नामक पहल की शुरुआत की।इस पहल का आदर्श वाक्य था : '2030 की ओर : सतत मानव व्यवहार के माध्यम से एस डी जी को हासिल करना' इस पहल के तहत बीएसजी कई गतिविधियां चला रही है। ताकि स्थिरता की संस्कृति के निर्माण में आम आदमी की भूमिका के प्रति जागरुकता फैलायी जा सके तथा एक ऐसी दुनिया का निर्माण किया जा सके जहाँ कोई भी पीछे न रह जाये।

सम्बंधित समाचार